इकाई 13 . छन्दों के लक्षण एवम् उदाहरण

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

छन्द से सम्बन्धित यह इकाई है । प्रस्तुत इकाई में आप अनुष्टुप, आर्या, इन्द्रवज्रा एवं उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ,स्रग्धरा बसन्ततिलका, शिखरिणी एवं शार्दूलविक्रीडत मालिनी, भुजंगप्रयात, स्रग्धरा एवं मन्दाक्रान्ता छन्द के लक्षण एवं उदाहरण का अध्ययन करेगें ।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप यह बता पायेगें कि किस श्लोक में किस छन्द का प्रयोग होता है ।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप यह बता पायेगें कि –

- अनुष्टुप छन्द का क्या लक्षण है ।
- उपजाति छन्द किसे कहते हैं ।
- किस छन्द में चार यगण होते हैं ।
- विविध छन्दों के क्या लक्षण है
- किस प्रकार श्लोक में वर्णित छन्द को पहचाना जा सकता है ।

13.3 आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा एवं उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ,स्रग्धरा (लक्षण, गणचिन्ह सहित उदाहरण)

1 . आर्या (मात्रावृत्त) - यस्या: प्रथमे पादे द्वादश मात्रा: तथा तृतीयेऽपि अष्टादशद्वितीये,चतुर्थे च पञ्चदश सार्या ।।

यह आर्या छन्द का लक्षण है । इसका अर्थ है कि जिस छन्द के पहले और तीसरे पाद (चरण) में बारह मात्रायें हों, दूसरे में अट्ठारह तथा चौथे में पन्द्रह मात्रायें हो वह छन्द आर्या कहलाता है । इस प्रकार आर्या के पूर्वार्द्ध में तीस और उत्तरार्द्ध में सत्ताइस मात्रायें होती हैं , कुल 57 मात्रायें होती हैं ।

उदाहरण - आगे देखें ....

2 2 1 2 1 1 1 2 = 12 , 2 1 1 2 1 1 1 2 1 2 2 2 = 18

क: पौरवे वसुमतीं शासति, शासितरि दुर्विनीतानाम् ।

1 1 2 1 2 1 1 1 2 =12, 2 2 1 1 2 1 1 2 2 =15

अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु ।। शाकुन्तलम् 1.25

अन्य उदाहरण –

कृष्ण: शिशु सुतो में वल्लवकुलटाभिराहृतो न गृहे ।

क्षणमपि वसत्यसाविति जगाद् गोष्ठ्यिां यशोदार्या ।।

2. अनुष्टुप् (वर्णिक छन्द)

इसको लौकिक साहित्य में पद्य तथा श्लोक भी कहते है । इसका लक्षण इस प्रकार है –

पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयो: ।

षष्ठं गुरू विजानीयात् एतत्पद्यस्य लक्षणम् ।।

अनुष्टुप के आठ-आठ अक्षर के चार पादों में पाँचवाँ अक्षर चारों पादो में लघु होना चाहिए तथा दूसरे और चौथे पाद का सातवाँ वर्ण भी लघु होना चाहिये एवं छठा अक्षर सभी पादों में गुरू होना चाहिये ।

अनुष्टुप छन्द दो प्रकार के हैं

1. अष्टाक्षरवृत्ति: जिसके एक-एक पाद में 8-8 अक्षर हो ।

2. एकादशाक्षरा वृत्ति जिसके प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर हों ।

उदाहरण – ।ऽ । ऽ ।

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते ।

। ऽ । ऽ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

चारों पादों के पाँचवें वर्ण म ,ण , न्म तथा ग लघु है तथा दूसरे पाद का च और चौथे पाद का य ये सातवें वर्ण भी लघु हैं और चारों पादों के छठें वर्ण यी, रो, भू तथा री गुरू हैं इसलिए यह अनुष्टुप छन्द का उदाहरण है ।

3. इन्द्रवज्रा -

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ ग: ।

यदि प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और दो गुरू वर्ण क्रमश: हों तो इन्द्रवज्रा छन्द होता है । इस

प्रकार प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण और चारों चरण मिलाकर 44 वर्ण होते हैं।

उदाहरण –

गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा रूष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्त वृष्टौ

ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, । ऽ।,ऽ ऽ, ऽ ऽ । ऽऽ। । ऽ। ऽ ऽ

यो गोकुलं गोपुकलं च सुस्थं चक्रे स नः रक्षतु चक्रपाणि ।।

ऽ ऽ ।,ऽ ऽ।, । ऽ । ऽ ऽ, ऽ ऽ । ऽ ऽ।। ऽ । ऽऽ

4. उपेन्द्रवज्रा - उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ।

जिस छन्द के चारो पादों में क्रमपूर्वक जगण, तगण, जगण हो तथा पादों के अन्त में गुरू वर्ण हों उसे उपेन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं।

उदाहरण –

अथात्मनः शब्द गुणं गुणज्ञः पदं विमानेन विगाहमानः ।

रत्नाकरं वीक्ष्य मिथः स जायां रामाभिधानो हरिरित्युवाच ।।

इस प्रकार इसमें क्रमशः जगण ,तगण, जगण तथा दो गुरू होने से उपेन्द्रवज्रा छन्द है।

5. उपजाति

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्तिजातिष्विदमेव नाम ।।

जाति पद छन्द का वाचक है, उपजाति का अर्थ है मिश्रित छन्द। यद्यपि लक्षणकारों ने इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मिश्र को ही उपजाति कहा है तथापि सामान्यतः दो छन्दों में बने सभी पद्यों में उपजाति छन्द माना जाता है।

छन्द का उपर्युक्त लक्षण ही उदाहरण है। इसका प्रथम तथा चतुर्थ चरण उपेन्द्रवज्रा है और द्वितीय तथा तृतीय चरण इन्द्रवज्रा है।

अनन्त रोदीरि तलक्ष्म भा जौ

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

पादौय दीयावु पजात यस्ता:

ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

इत्थंकि लान्यास्व पिमिश्रि ता सु

ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

वदन्ति जातिष्वि दमेव नाम

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

उदाहरण –

शम प्रधानेषु तपोधनेषु ,गूढ़ं हि दाहात्मकमस्ति तेज: ।

स्पर्शानुकूला अपि चन्द्रकान्ता,स्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति ।। शाकुन्तलम् 2.7

शमप्र धानेषु तपोध ने षु

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

गूढ़ंहि दाहात्म कमस्ति ते ज:

ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

6. वंशस्थ

वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में जगण , तगण , जगण ,रगण हो उसे वंशस्थ छन्द कहते हैं। छन्द का उपर्युक्त लक्षण ही उदाहरण है।

वदन्ति वंशस्थ विलंज तौजरौ

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

जगण तगण जगण रगण

उदाहरण – **भवन्ति नम्रास्तरव: फलोद् गमै: र्नवाम्बुभि र्दूरविलम्बिनो घना: ।**

अनुद्धता: सत्पुरूषा: समृद्धिभि: स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ।।

शाकुन्तलम् 5.12

नवाम्बु भिर्दूर विलम्बि नोघना:

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

7. स्रग्धरा

एकविंशत्यक्षराजाति: (21 अक्षरों वाला छन्द)

म्रम्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण, नगण, और अन्त में तीन यगण हो और प्रत्येक सातवें वर्ण पर यति क्रमश: होती है उसे स्रग्धरा छन्द कहते हैं।

म्रम्नैर्या नांत्रये णत्रिमुनियति युतास्र ग्धराकी र्तितेयम्

ऽऽऽ ऽ।ऽ ऽ।ऽ ।।। ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

मगण रगण भगण नगण यगण यगण यगण

लक्षण ही उदाहरण है।

उदाहरण –

या स्रष्टि: स्रष्टुराद्या, वहतिविधिहुतं, याहविर्या च होत्री

ये द्वे कालं विधत्त: श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्यविश्वम्

यामाहु: सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिन: प्राणवन्त:,

प्रत्यक्षाभि: प्रपन्नस्तनुभिरवतुवस्ताभिरष्टाभिरीश: ।।

13.4 वसन्ततिलका, शिखरिणी एवं शार्दूलविक्रीडित,मालिनी, भुजंगप्रयात एवं मन्दाक्रान्ता (लक्षण एवं उदाहरण)

1. बसन्ततिलका

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ ग: ।

जिस छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमश: तगण,भगण और दो जगण तथा दो गुरू हों वहाँ वसन्ततिलका छन्द होता है।

उक्ताव वसन्तति लकात भजाज गौ ग:

ऽऽ। ऽ।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

तगण भगण जगण जगण गु गु

इस छन्द का लक्षण ही उदाहरण है।

उदाहरण –

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान् , पर्युत्सुको भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः।

तच्चेतसा स्मरति नूनं मबोधपूर्वं , भावस्थिराणि जननान्तर सौहृदानि ।।

ऽऽ।	ऽ।।	।ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
रम्याणि	वीक्ष्यम्	मधुरांश्च	निशम्य	शब्दान्

2. शिखरिणी -

रसैरूद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।।

जिस छन्द के प्रत्येक पाद(चरण) में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में एक लघु एक गुरू हो उसे शिखरिणी छन्द कहते है। इसमें छः तथा ग्यारहवें वर्णो पर यति होती है।

रसैरू	द्रैश्छिन्ना	यमन	सभला	ग:शिख	रिणी
।ऽऽ	ऽऽऽ	।।।	।।ऽ	ऽ।।	।ऽ
यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	ल गु

लक्षण ही उदाहरण है।

उदाहरण –

महाभागः कामं नरपतिरभिन्नस्थितिरसौ न कश्चिद्वर्णानामपथमपकुष्टोऽपि भजते।

तथापीदं शस्वन्परिचितविविक्तेन मनसा जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव ।।

जनाकी	र्णमन्ये	हुतव	हपरी	तंगृह	मिव
।ऽऽ	ऽऽऽ	।।।	।।ऽ	ऽ।।	। ऽ

3. शार्दूलविक्रीडित

सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ।।

अथवा

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा गुरू वर्ण हों ,

बारहवें और तदनन्तर सातवें वर्ण पर यति होती है , उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते हैं।

सूर्याश्वै	र्यदिम:	सजौस	ततगा:	शार्दूल	विक्रीड	तम्
ऽऽऽ	।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	ऽऽ।	ऽऽ।	ऽ
मगण	सगण	जगण	सगण	तगण	तगण	गु

उदाहरण -

नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः

प्रस्निग्धाः क्वचिदिऽगुंदी फलमिदः सूच्यन्त एवोपलाः।

विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा

-स्तोयाधारपयाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाऽ.किंता

प्रस्निग्धा: क्वचिदिं गुदीफ लमिद: सूच्यन्त एवोप ला:।

ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ

4. **मालिनी**

ननमयययुतेयं मालिनी भौगिलोकै: ।।

जिसके प्रत्येक चरण में क्रमश: दो नगण, मगण, दो यगण हों तथा आठवें और तदनन्तर सातवें वर्ण के बाद यति हो वह मालिनी छनद कहलाता है।

ननम	यययु	तेयंमा	लिनीभो	गिलोकै:
।।।	।।।	ऽऽऽ	।ऽऽ	।ऽऽ
नगण	नगण	मगण	यगण	यगण

लक्षण ही उदाहरण है।

उदाहरण -

स्व सुखनिरभिलाष: खिद्यसे लोकहेतो: प्रतिदिनमथवा ते वृत्तिरेवं विधैव।

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् ।।

अनुभ	वतिहि	मूर्ध्नापा	दपस्ती	व्रमुष्णम्
।।।	।।।	ऽऽऽ	।ऽऽ	।ऽऽ

5. **भुजंगप्रयात- भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारै: ।**

भुजंगप्रयात में चार यगण होते है।

भुजंग	प्रयातं	चतुर्भि	र्यकारैः
।ऽऽ	।ऽऽ	।ऽऽ	।ऽऽ
यगण	यगण	यगण	यगण

छन्द का उपुर्यक्त लक्षण ही उदाहरण है।

अभ्यास प्रश्न 1

1. जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ किस छन्द का लक्षण है ?

   (क) मालिनी (ख) आर्या

   (ग) अनुष्टुप (घ) वंशस्थ

2. चार यगण किस छन्द में होते हैं ?

   (क) मालिनी (ख) अनुष्टुप

   (ग) भुजंगप्रयात (घ) आर्या

3.स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ ------------ ग:।

4. ननुमययययुतेयं ——— भोगिलोकै:।

अभ्यास प्रश्न 2

1. आर्या छन्द का लक्षण उदाहरण सहित लिखिये।
2. उपजाति छन्द का लक्षण लिखिये।

मन्दाक्रान्ता - मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भो नतौ ताद् गुरू: चेत।

जिस छन्द के चारों पादों में से प्रत्येक पाद में क्रमश: मगण,भगण,नगण तथा दो तगण और अन्त में दो गुरू हों उसे मन्दाक्रान्ता कहते हैं। इसमें चार, छ: तथा सात अक्षरों पर यति होती है।

उदाहरण-

अध्याक्रांता वसतिरमुनाप्याश्रमे सर्वभोग्ये, रक्षायोगादयमपि तप: प्रत्यहं संचिनोति

अस्यापि द्यां स्पृशति वंशिनश्चारणद्वन्द्वगीतिः पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः ॥

अध्याक्रा	न्तावस	तिरमु	नाप्याश्र	मेसर्व	भोग्ये	
ऽ ऽ ऽ	ऽ । ।	। । ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ	
मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गु गु	

13.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन से आपने यह जाना कि वर्णिक और मात्रिक दो प्रकार के छन्द होते हैं। आर्या नामक मात्राछन्द एवं वर्णिक इन्द्रवज्रा,उपेन्द्रवज्रा, अनुष्टुप ,उपजाति आदि विविध छन्दों को उदाहरण के साथ जाना। इसके अध्ययनोपरान्त आप किसी भी पद्य अथवा श्लोक में प्रयुक्त छन्द को समझा सकेगें।

13.6 शब्दावली

जाति . मात्रिक छन्दों को जाति कहा जाता हैं।

वृत्त. वर्णित छन्दों को वृत्त कहा जाता हैं।

पाद . चरण, छनद के चतुर्थांश को पाद अथवा चरण कहा जाता है।

13.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1 – 1. घ 2. ग 3. जगौ 4. मालिनी
अभ्यास प्रश्न 2- उत्तर इकाई में देखें।

13.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अलंकार तथा छन्द , डॉ0 श्रीधर मिश्र एवं डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी ,पी0के0 पब्लिकेशन, गोरखपुर।
2. छन्दोलंकार दीपिका ,श्री भवभूति शर्मा , डॉ0 हरिदत्त शास्त्री , साहित्य निकेतन , कानपुर।

13.8 सहायक एवं उपयोगी पुस्तकें

1. अलंकार तथा छन्द , डॉ0 श्रीधर मिश्र एवं डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी ,पी0के0 पब्लिकेशन, गोरखपुर।

2. छन्दोलंकार दीपिका ,श्री भवभूति शर्मा , डॉ0 हरिदत्त शास्त्री , साहित्य निकेतन , कानपुर ।

13.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विविध छन्दों को लक्षण एवं उदाहरण सहित लिखिये ।

2. किन्हीं दश श्लोकों को चुनकर लिखिये जिसमें वंशस्थ छन्द हो ।